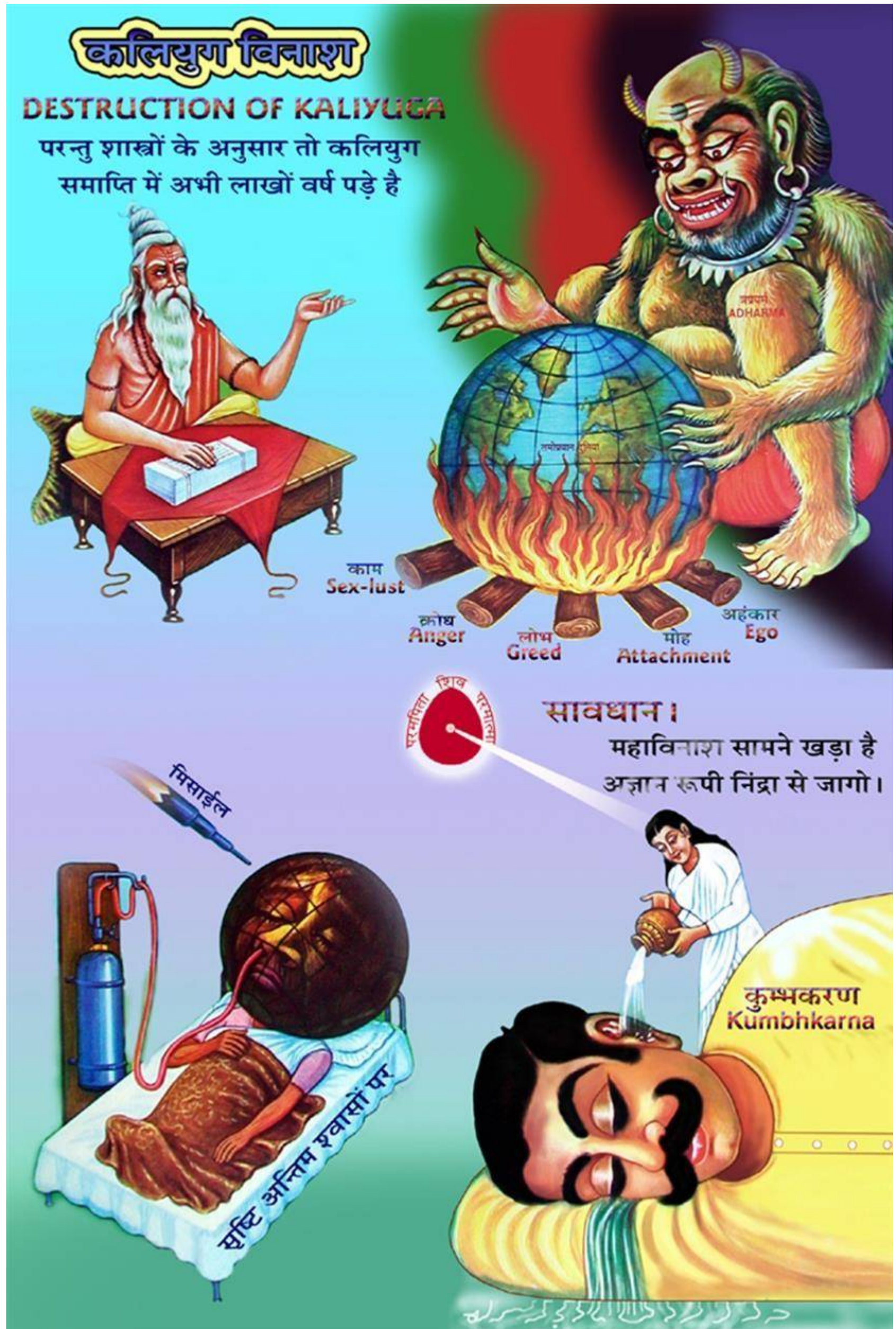


कलियुग अभी बच्चा नहीं है बल्कि बुढ़ा हो गया है





## इसका विनाश निकट है और शीघ्र ही सतयुग आने वाला है ।

आज बहुत से लोग कहते हैं , “कलियुग अभी बच्चा है अभी तो इसके लाखों वर्ष और रहते हैं शस्त्रों के अनुसार अभी तो सृष्टि के महाविनाश में बहुत काल रहता है ।”

परन्तु अब परमपिता परमात्मा कहते हैं की अब तो कलियुग बुढ़ा हो चूका है । अब तो सृष्टि के महाविनाश की घड़ी निकट आ पहुंची है । अब सभी देख भी रहे हैं की यह मनुष्य सृष्टि काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार की चिता पर जल रही है । सृष्टि के महाविनाश के लिए एटम बम, हाइड्रोजन बम तथा मुसल भी बन चुके हैं । अतः अब भी यदि कोई कहता है कि महाविनाश दूर है, तो वह घोर अज्ञान में है और कुम्भकर्णी निद्रा में सोया हुआ है, वह अपना अकल्याण कर रहा है । अब जबकि परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर ज्ञान अमृत पिला रहे हैं, तो वे लोग उनसे वंचित हैं ।

आज तो वैज्ञानिक एवं विद्याओं के विशेषज्ञ भी कहते हैं कि जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ रही है, अन्न की उपज इस अनुपात से नहीं बढ़ रही है । इसलिए वे अत्यंत भयंकर अकाल के परिणामस्वरूप महाविनाश की घोषणा करते हैं । पुनश्च, वातावरण प्रदूषण तथा पेट्रोल, कोयला इत्यादि शक्ति स्रोतों के कुछ वर्षों में खत्म हो जाने की घोषणा भी वैज्ञानिक कर रहे हैं । अन्य लोग पृथ्वी के ठण्डे होते जाने होने के कारण हिम-पात की बात बता रहे हैं । आज केवल रूस और अमेरिका के पास ही लाखों तन बमों जितने आणविक शस्त्र हैं । इसके अतिरिक्त, आज का जीवन ऐसा विकारी एवं तनावपूर्ण हो गया है कि अभी करोड़ों वर्ष तक कलियुग को मन्ना तो इन सभी बातों की ओर आंखें मूंदना ही है परन्तु सभी को याद रहे कि परमात्मा अधर्म के महाविनाश से ही देवी धर्म की पुनः स्थापना भी कराते हैं ।

अतः सभी को मालूम होना चाहिए कि अब परमप्रिय परमपिता परमात्मा शिव सतयुगी पावन एवं देवी सृष्टि की पुनः स्थापना करा रहे हैं । वे मनुष्य को देवता अथवा पतितों को पावन बना रहे हैं । अतः अब उन द्वारा सहज राजयोग तथा ज्ञान- यह अनमोल विद्या सीखकर जीवन को पावन, सतोप्रधान देवी, तथा आनन्दमय बनाने का सर्वोत्तम पुरुषार्थ करना चाहिए जो लोग यह समझ बैठे हैं कि अभी तो कलियुग में लाखों वर्ष शेष हैं, वे अपने ही सौभाग्य को लौटा रहे हैं!

अब कलियुगी सृष्टि अंतिम श्वास ले रही है, यह मृत्यु-शैया पर है यह काम, क्रोध लोभ, मोह और अहंकार रोगों द्वारा पीड़ित है । अतः इस सृष्टि की आयु अरबों वर्ष मानना भूल है । और कलियुग को अब बच्चा मानकर अज्ञान-निद्रा में सोने वाले लोग “कुम्भकरण” है । जो मनुष्य इस ईश्वरीय सन्देश को एक कण से सुनकर दुसरे कण से निकल देते हैं उन्हीं के कान ऐसे कुम्भ के समान हैं, क्योंकि कुम्भ बुद्धि-हीन होता है।

## क्या रावण के दस सिर थे, रावण किसका प्रतीक है ?



भारत के लोग प्रतिवर्ष रावण का बुत जलाते हैं। उनका काफी विश्वास है की एक दस सिर वाला रावण श्रीलंका का राजा था, वह एक बहुत बड़ा राक्षस था और उसने श्री सीता का अपहरण किया था। वे यह भी मानते हैं की रावण बहुत बड़ा विद्वान था इसलिए वे उसके हाथ में वेद, शास्त्र इत्यादि दिखाते हैं। साथ ही वे उसके शीश पर गंधे का सिर भी दिखाते हैं। जिसका अर्थ वे यह लेते हैं की वह हठी और मतिहीन था लेकिन अब परमपिता परमात्मा शिव ने समझाया है की रावण कोई दस शीश वाला राक्षस (मनुष्य) नहीं था बल्कि रावण का पुतला वास्तव में बुरे का प्रतीक है रावण के दस सिर पुरुष और स्त्री के पांच-पांच विकारों को प्रकट करते हैं। और उसकी तुलना एक ऐसे समाज का प्रतिरूप है जो इस प्रकार के विकारी स्त्री-पुरुष का बना हो इस समाज के लोग बहुत ग्रन्थ और शास्त्र पढ़े हुए तथा विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त भी हो सकते हैं लेकिन वे हिंसा और अन्य विकारों के वशीभूत होते हैं। इस तरह उनकी विद्वता उन पर बोझ मात्र होती है। वे उद्दंड बन गए होते हैं। और भलाई की बातों के लिए उनके कान बंद हो गए होते हैं। ” रावण ” शब्द का अर्थ ही है – जो दूसरों को रूलाने वाला है। अतः यह बुरे कर्मों का प्रतीक है, क्योंकि बुरे कर्म ही तो मनुष्य के जीवन में दुःख व आंसू लाते हैं अतएव सीता के अपहरण का भाव वास्तव में आत्माओं की शुद्ध भावनाओं ही के अपहरण का सूचक है। इसी प्रकार कुम्भकरण आलस्य का तथा “मेघनाथ” कटु वचनों का प्रतीक है और यह सारा संसार ही एक महाद्वीप है अथवा मनुष्य का मन ही लंका है।

इस विचार से हम कह सकते हैं की इस विश्व में द्वापरयुग और कलियुग में (अर्थात् २५०० वर्षों) “रावण राज्य” होता है क्योंकि इन दो युगों में लोग माया या विकारों के वशीभूत होते हैं उस समय अनेक पूजा पाठ करने तथा शास्त्र पढ़ने के बाद भी मनुष्य विकारी, अधर्मी बन जाते हैं रोग, शोक, अशांति और दुःख का सर्वत्र बोल बाला होता है। मनुष्यों का खानपान असुरों जैसा (मांस, मदिरा, तामसी भोजन आदि) बन जाता है वे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि विकारों के वशीभूत होकर एक दुसरे को दुःख देते और रुलाते रहते हैं। ठीक इसके विपरीत स्वर्ण युग और रजत युग में राम-राज्य था, क्योंकि परमपिता, जिन्हें की रमणीक अथवा सुखदाता होने के कारण ” राम ” भी कहते हैं, ने उस पवित्रता, शांति और सुख संपन्न देसी स्वराज्य की पुनः स्थापना की थी उस राम राज्य के बारे में प्रसिद्ध है की तब शहद और दूध की नदिया बहती थी और शेर तथा गाय एक ही घाट पर पानी पीते थे।

अब वर्तमान में मनुष्यात्माये फिर से माया अर्थात् रावण के प्रभाव में है औद्योगिक उन्नति, प्रचुर धन-धन्य और सांसारिक सुख – सभी साधन होते हुए भी मनुष्य को सच्चे सुख शांति की प्राप्ति नहीं है। घर-घर में कलह कलेश लड़ाई-झगडा और दुःख अशांति है तथा मिलावट, अधर्म और असत्यता का ही राज्य है तभी तो ऐसे “रावण राज्य” कहते हैं।

अब परमात्मा शिव गीता में दिए अपने वचन के अनुसार सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और मनुष्यात्माओं के मनोविकारों को खत्म करके उनमें देवी गुण धारण करा रहे हैं ( वे पुनः विश्व में बापू-गांधी के स्वप्नों के राम राज्य की स्थापना करा रहे हैं ) अतः हम सबको सत्य धर्म और निर्विकारी मार्ग अपनाते हुए परमात्मा के इस महान कार्य में सहयोगी बनना चाहिए।



## मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है ?

CREATOR & HIS DIVINE CREATION

रचयिता और उनकी दैवी रचना



SHRI LAKSHMI & SHRI NARAYAN FIRST EMPRESS & EMPEROR OF GOLDEN-AGED  
HEAVENLY NEW WORLD WHERE 100% PURITY, PEACE AND PROSPERITY PREVAIL

Published by: prajapita Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyala  
Pandav Bhawan Mount Abu. RAJASTHAN, India

श्री लक्ष्मी और श्री नारायण, सतयुगी नई दैवी सृष्टि के प्रथम विश्व महारानी  
और विश्व महाराजन्, जहाँ 100% सुख, शान्ति और पवित्रता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय, पाण्डव भवन, माउण्ट आबू-307501 राजस्थान, भारत

मनुष्य का वर्तमान जीवन बड़ा अनमोल है क्योंकि अब संगमयुग में ही वह सर्वोत्तम पुरुषार्थ करके जन्म-जन्मान्तर के लिए सर्वोत्तम प्रारब्ध बना सकता है और अतुल हीरो-तुल्य कमाई कर सकता है।



वह इसी जन्म में सृष्टि का मालिक अथवा जगतजीत बनने का पुरुषार्थ कर सकता है | परन्तु आज मनुष्य को जीवन का लक्ष्य मालूम न होने के कारण वह सर्वोत्तम पुरुषार्थ करने की बजाय इसे विषय-विकारो में गँवा रहा है | अथवा अल्पकाल की प्राप्ति में लगा रहा है | आज वह लौकिक शिक्षा द्वारा वकील, डाक्टर, इंजिनियर बनने का पुरुषार्थ कर रहा है और कोई तो राजनीति में भाग लेकर देश का नेता, मंत्री अथवा प्रधानमंत्री बनने के प्रयत्न में लगा हुआ है अन्य कोई इन सभी का सन्यास करके, “सन्यासी” बनकर रहना चाहता है | परन्तु सभी जानते हैं की प्रत्यु-लोक में तो राजा-रानी, नेता वकील, इंजिनियर, डाक्टर, सन्यासी इत्यादि कोई भी पूर्ण सुखी नहीं है | सभी को तन का रोग, मन की अशांति, धन की कमी, जानता की चिंता या प्रकृति के द्वारा कोई पीड़ा, कुछ न कुछ तो दुःख लगा ही हुआ है | अतः इनकी प्राप्ति से मनुष्य जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती क्योंकि मनुष्य तो सम्पूर्ण – पवित्रता, सदा सुख और स्थाई शांति चाहता है |

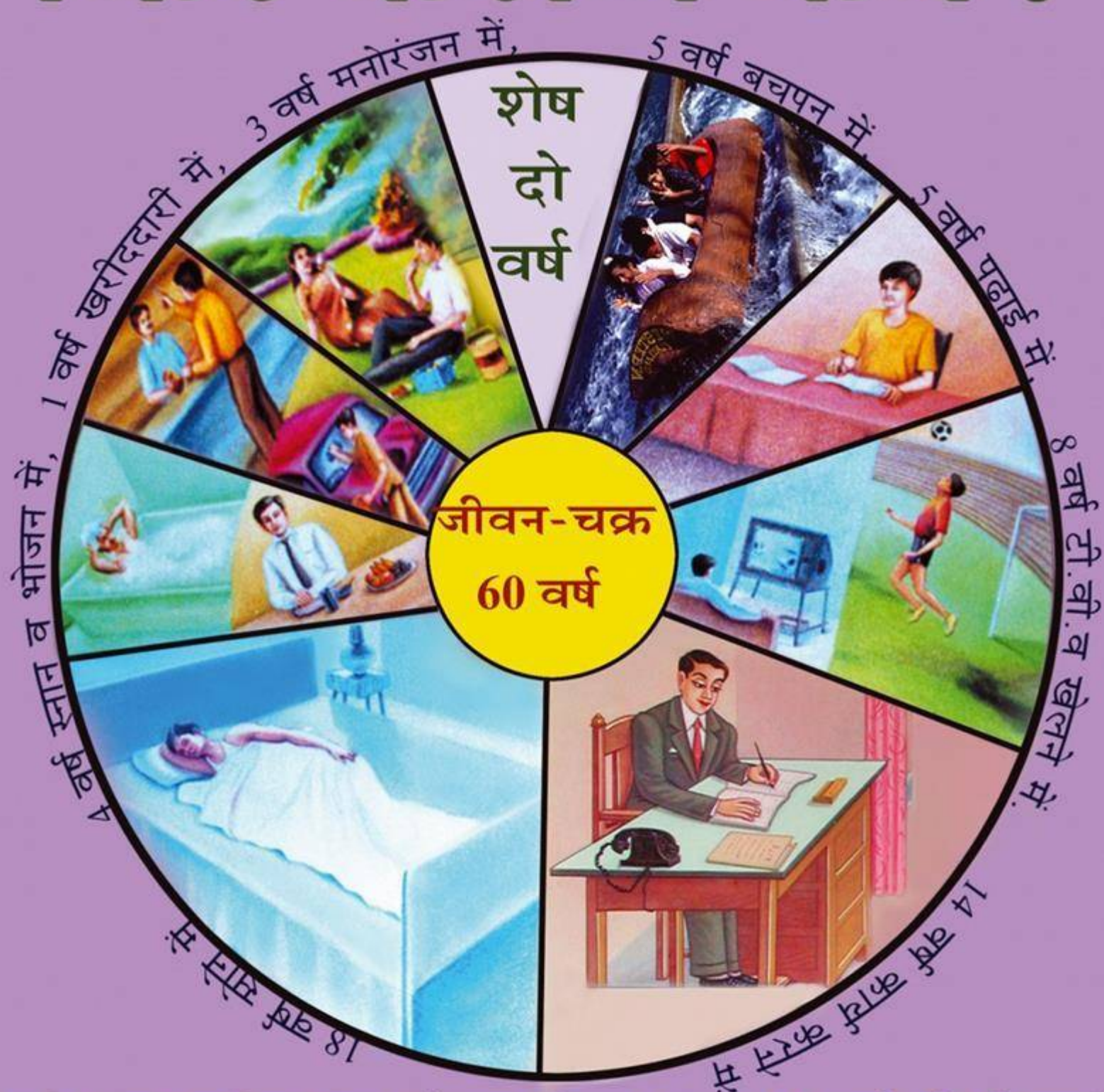
चित्र में अंकित किया गया है कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य जीवन-मुक्ति की प्राप्ति अथवा वैकुण्ठ में सम्पूर्ण सुख-शांति-संपन्न श्री नारायण या श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति ही है | क्योंकि वैकुण्ठ के देवता तो अमर मने गए हैं, उनकी अकाल प्रत्यु नहीं होती; उनकी काया सदा निरोगी रहती है | और उनके खजाने में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होती इसीलिए तो मनुष्य स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ को याद करते हैं और जब उनका कोई प्रिय सम्बन्धी शरीर छोड़ता है तो वह कहते हैं कि -” वह स्वर्ग सिधार गया है ” |

### इस पद की प्राप्ति स्वयं परमात्मा ही ईश्वरीय विद्या द्वारा कराते है

इस लक्ष्य की प्राप्ति कोई मनुष्य अर्थात् कोई साधू-सन्यासी, गुरु या जगतगुरु नहीं करा सकता बल्कि यह दो ताजो वाला देव-पद अथवा राजा-रानी पद तो ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा शिव ही से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग के अभ्यास से प्राप्त होता है |



# फिर करोगे कब ?



यदि एक व्यक्ति का औसत जीवन -चक्र 60 वर्ष हो तो उसमें से लगभग 58 वर्ष वह खेलने, पढ़ने, सोने, स्नान आदि कार्य, भोजन करने, कार्य करने, खरीद-दारी, मनोरंजन आदि में व्यतीत कर देता है। मुश्किल से दो वर्ष शेष बचते हैं जिसका यदि वह चाहे तो नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में सदुपयोग कर सकता है। किन्तु यह समय भी वह अनावश्यक कार्यों में लगा देता है। वास्तव में मनुष्य का जन्म केवल खाने-पीने, जीवन निर्वाह और फिर दुनिया से चले जाने के लिए नहीं हुआ है परन्तु आत्मोन्नति करना एवं अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना भी उसका कर्तव्य है।

अतः जबकि परमपिता परमात्मा शिव ने इस सर्वोत्तम ईश्वरीय विद्या की शिक्षा देने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना की है। तो सभी नर-नारियों को चाहिए की अपने घर-



गृहस्थ में रहते हुए अपना कार्य धंधा करते हुए प्रतिदिन एक-दो- घंटे निकलकर अपने भावी जन्म-जन्मान्तर के कल्याण के लिए इस सर्वोत्तम तथा सहज शिक्षा को प्राप्त करें ।

इस विद्या की प्राप्ति के लिए कुछ भी खर्च करने की आवश्यकता नहीं है, इसीलिए इसे तो निर्धन व्यक्ति भी प्राप्त कर अपना सौभाग्य बना सकते हैं । इस विद्या को तो कन्याओं, मत्तों, वृद्ध-पुरुषों, छोटे बच्चों और अन्य सभी को प्राप्त करने का अधिकार है क्योंकि आत्मा की दृष्टि से तो सभी परमपिता परमात्मा की संतान हैं ।

**अभी नहीं तो कभी नहीं**

वर्तमान जन्म सभी का अंतिम जन्म है । इसलिये अब यह पुरुषार्थ न किया तो फिर यह कभी न हो सकेगा क्योंकि स्वयं ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा दिया हुआ यह मूल गीता — ज्ञान कल्प में एक ही बार इस कल्याणकारी संगम युग में ही प्राप्त हो सकता है ।

निकट भविष्य में श्रीकृष्ण आ रहे हैं

निकट भविष्य में होने वाले महाविनाश के पश्चात् शीघ्र ही  
श्री कृष्ण आ रहे हैं

Prajapita Brahma Kumaris  
Ishwariya Vishwa Vidyalaya  
PONDICHERRY MOUNT ABU  
(Rajasthan)

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय  
पुण्डिचरी, माउंट अबु  
(राजस्थान)

सम्पूर्ण अहिंसक  
ALL VIRTUOUS  
१६ कला सम्पूर्ण  
FIRST DEITY PRINCE OF SATYUGA  
मर्यादा पुरुषोत्तम  
16 CELESTIAL DEGREES COMPLETE  
सम्पूर्ण निर्विकारी  
COMPLETE NON-VIOLENT  
सतयुग के प्रथम महाराजकुमार  
COMPLETELY VICELESS

सतयुगी भारत  
वैकुण्ठ

**SHRI KRISHNA COMING**  
After The Forthcoming Huge Destruction

प्रतिदिन समाचार-पत्रों में अकाल, बाढ़, भ्रष्टाचार व लड़ाई-झगड़े का समाचार पढ़ने को मिलता है। प्रकृति के पांच तत्व भी मनुष्य को दुःख दे रहे हैं और सारा ही वातावरण दूषित हो गया है। अत्याचार, विषय-विकार तथा



अधर्म का ही बोलबाला है। और यह विश्व ही “काँटों का जंगल” बन गया है। एक समय था जबकि विश्व में सम्पूर्ण सुख शांति का साम्राज्य था और यह सृष्टि फूलों का बगीचा कहलाती थी। प्रकृति भी सतोप्रधान थी। और किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ नहीं थी। मनुष्य भी सतोप्रधान, देविगुणसंपन्न थे। और आनंद खुशी से जीवन व्यतीत करते थे। उस समय यह संसार स्वर्ग था, जिसे सतयुग भी कहते हैं इस विश्व में समृद्धि, सुख, शांति का मुख्य कारण था कि उस समय के राजा तथा प्रजा सभी पवित्र और श्रेष्ठाचारी थे इसलिए उनको सोने के रत्न-जडित ताज के अतिरिक्त पवित्रता का ताज भी दिखाया गया है। श्रीकृष्ण तथा श्री राधा सतयुग के प्रथम महाराजकुमार और महाराजकुमारी थे जिनका स्वयंवर के पश्चात् ” श्री नारायण और श्री लक्ष्मी” नाम पड़ता है। उनके राज्य में ” शेर और गाय” भी एक घाट पर पानी पीते थे, अर्थात् पशु पक्षी तक सम्पूर्ण अहिंसक थे। उस समय सभी श्रेष्ठाचारी, निर्विकारी अहिंसक और मर्यादा पुरुषोत्तम थे, तभी उनको देवता कहते हैं जबकि उसकी तुलना में आज का मनुष्य विकारी, दुखी और अशांत बन गया है। यह संसार भी रौरव नरक बन गया है। सभी नर-नारी काम क्रोधादि विषय-विकारों में गोता लगा रहे हैं। सभी के कंधे पर माया का जुआ है तथा एक भी मनुष्य विकारों और दुखों से मुक्त नहीं है।

अतः अब परमपिता परमात्मा, परम शिक्षक, परम सतगुरु परमात्मा शिव कहते हैं, “हे वत्सो ! तुम सभी जन्म-जन्मान्तर से मुझे पुकारते आये हो कि – हे पभो, हमें दुःख और अशांति से छुड़ाओ और हमें मुक्तिधाम तथा स्वर्ग में ले चलो। अतः अब मैं तुम्हें वापस मुक्तिधाम में ले चलने के लिए तथा इस सृष्टि को पावन अथवा स्वर्ग बनाने आया हूँ। वत्सो, वर्तमान जन्म सभी का अंतिम जन्म है अब आप वैकुण्ठ ( सतयुगी पावन सृष्टि) में चलने की तैयारी करो अर्थात् पवित्र और योग-युक्त बनो क्योंकि अब निकट भविष्य में श्रीकृष्ण ( श्रीनारायण) का राज्य आने ही वाला है तथा इससे इस कलियुगी विकारी सृष्टि का महाविनाश एतद् बमों, प्राकृतिक आपदाओं तथा गृह युद्ध से हो जायेगा। चित्र में श्रीकृष्ण को ” विश्व के ग्लोब” के ऊपर मधुर बंशी बजाते हुए दिखाया है जिसका अर्थ यह है कि समस्त विश्व में “श्रीकृष्ण” ( श्रीनारायण) का एक छात्र राज्य होगा, एक धर्म होगा, एक भाषा और एक मत होगी तथा सम्पूर्ण खुशहाली, समृद्धि और सुख चैन की बंशी बजेगी।

बहुत-से लोगो की यह मान्यता है कि श्रीकृष्ण द्वापर युग के अंत में आते हैं। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि श्रीकृष्ण तो सर्वगुणसंपन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी एवं पूर्णतः पवित्र थे। तब भला उनका जन्म द्वापर युग की रजो प्रधान एवं विकारयुक्त सृष्टि में कैसे हो सकता है ? श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए सूरदास ने अपनी अपवित्र दृष्टि को समाप्त करने की कोशिश की और श्रीकृष्ण- भक्तिन मीराबाई ने पवित्र रहने के लिए जहर का प्याला पीना स्वीकार किया, तब भला श्रीकृष्ण देवता अपवित्र दृष्टि वाली सृष्टि में कैसे आ सकते हैं ? श्रीकृष्ण तो स्वयंवर के बाद श्रीनारायण कहलाये तभी तो श्रीकृष्ण के बुजुर्गों के चित्र नहीं मिलते। अतः श्रीकृष्ण अर्थात् सतयुगी पावन सृष्टि के प्रारम्भ में आये थे और अब पुनः आने वाले हैं।